दरभंगा राज के स्थापत्य संदर्भित धरोहर

*अशोक कुमार**

स्थापत्य एक ऐसी सृजनात्मक विधा है कि जो हजारों वर्ष पुरानी मानव-संस्कृति के विविध पहलुओं को परिलक्षित करती है। वस्तुत: विगत सभ्यता, संस्कृति शासन या राजवंश उस समय साकार हो जाता है, जब उस काल में सृजित स्थापत्य सरंचनाओं का हम अवलोकन और अन्वेषण करते हैं। इतिहास को अपने तथ्य की पुष्टि के लिए साक्ष्य चाहिए। स्थापत्य सर्जनाओं से बढ़ कर और कौन साक्ष्य हो सकता है? यह स्थापत्य विधा ही तो है जिसके आधार पर सिन्धु-सभ्यता का पुरा-इतिहास प्रकाश में आया है। इस विधा के आधार पर तत्कालीन सामाजिक, धार्मिक एवं आर्थिक पहलुओं का ऐतिहासिक अध्ययन हो सकता है। दरभंगा राज के स्थापत्य सन्दर्भित पहलुओं के अध्ययन के लिए आइये पहले हम विषयजनित कुछ आँकड़ों पर एक नजर डालें -

1558 ई० के आस-पास महाराज महेश ठाकुर ने इस राजवंश की नींव डाली। 1952 ई0 में यह राजवंश सरकारी तौर पर सत्ताच्युत हो गया। तो लगभग चार सौ वर्षों के इतिहास में कुल 19 शासकों ने अकबर द्वारा प्रदत्त सरकार-ए-तिरहुत अर्थात् मिथिला का शासन-संचालन किया। इन चार सौ वर्षों के दौरान दरभंगा राज के तत्वावधान में लगभग एक सौ पचास मन्दिर, बीस महल, चार किले, लगभग पाँच धर्मशालाएँ, तीन पुस्तकालय, विविध प्रयोजनार्थ छोटे-बड़े भवन, तीन सौ से अधिक तालाब एवं कुएँ आदि के निर्माण हुए। इनके अतिरिक्त एक आदर्श नगर के रूप में दरभंगा का विकास हुआ एवं तीन 'टाउनशिप' की स्थापना हुई -

1.	मन्दिर	:	150 (लगभग)
2.	महल	:	20
3.	किले	:	4
4.	धर्मशाला	:	5
5.	पुस्तकालय	:	3

6. पोखर : 150 (लगभग)
7. कुएँ : 150 (लगभग)
8. आदर्श नगर-दरभंगा: 1
9. टाउनशिप : 3 (शुभंकरपुर, सुन्दरपुर तथा भौरागढ़ी)
10. विविध प्रयोजनार्थ अन्य भवन : 350 (लगभग)

स्थापत्य सर्जनाओं के अधिकांश कार्य दरभंगा तथा इसके निकटवर्ती क्षेत्रों में हुए। परन्तु स्थापत्य के कुछ विशिष्ट अंश, दूर-दराज के क्षेत्रों में निर्मित हुए। इनमें से बिहार का मुजफ्फरपुर; पश्चिम बंगाल के कलकत्ता, खड़गपुर और दार्जिलिंग; उत्तरप्रदेश के वाराणसी, इलाहाबाद, कनखल और ऋषिकेश; हिमाचल प्रदेश का शिमला तथा राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली एवं पाकिस्तान के लाहौर जैसे केन्द्र शामिल हैं। मिथिला क्षेत्र में सृजन का यह कार्य दरभंगा के अतिरिक्त राजनगर, मधुबनी, झंझारपुर, भवानीपुर, लोहना, पैटघाट, कन्दर्पीघाट, सिमरी, सौरीपटी, सौराठ, उच्चैठ, छछवुलिया, भैरागढ़ी, भौर (राजग्राम), गन्धावारि, नाहर कल्याणपुर, पंडौल, हाटी, महिषी, नवबस्ती, मंगरौनी, पिपरागाच्छी आदि तक व्याप्त था।

किन्तु भारत का यह सांस्कृतिक क्षेत्र विनाशकारी भूकम्प और प्रलयंकारी बाढ़ से सदैव त्रस्त रहा है। निश्चित रूप से इन दोनों प्राकृतिक आपदाओं ने सर्वाधिक क्षति स्थापत्य कृतियों को ही पहुँचायी है। फलत: बीसवीं सदी के प्रथम तीन दशकों के दौरान दरभंगा राज्य के सौजन्य से बने भवन भी अपनी अस्मिता बचाये रखने में असमर्थ हो गए, जब 1934 के विध्वंसकारी भूकम्प का निर्दयी झटका उन्हें लगा। इसलिए 1934 के पूर्व बने भवनों की संख्या आज की तारीख में अपेक्षाकृत काफी कम है। फिर भी दरभंगा, भौरागढ़ी, राजनगर आदि क्षेत्र में बने भवन, मन्दिर, आदि सौ वर्षों से अधिक होने के बावजूद अपनी कलात्मकता का जीवन्त परिचय देने के लिए पर्याप्त हैं। वैसे भी खंडबला कुल के अन्तिम तीन शासक क्रमश: महाराजा लक्ष्मीश्वर सिंह, महाराज रमेश्वर सिंह तथा महराजाधिराज कामेश्वर सिंह के निर्माण-कार्य इतने आकर्षक, कलांत्मक और समन्वित हैं, कि आँखें मंत्रमुग्ध हो जाती हैं।

उपरोक्त आँकड़ों से स्पष्ट है कि दरभंगा-राज के तत्वावधान में स्थापत्य सन्दर्भित अधिकांश कार्य मन्दिर-निर्माण के लिए हुए। और फिर, इन मन्दिरों के लिए जिस स्थापत्य शैली का अनुसरण किया गया, वह था उत्तरी भारत में सर्वाधिक प्रचलित 'नागरशैली'। नागर स्थापत्य में नीचे से ऊपर की स्तूपी तक का भाग आयताकार या फिर कहीं-कहीं वर्गाक्रार होता है। इसकी मूलभूत

विशेषता अनुप्रस्थिका (मापचित्र) तथा उत्थापन (ऊपर की ओर उत्कर्ष) है। वस्तुतः इसके नियोजन में आयताकार माप चित्र के दोनों पार्श्वों में क्रमिक रूप से निकला हुआ बाहरी भाग होता है और अपनी ऊँचाई के क्रम में शिखर पतला होता जाता है। अधिकांश मन्दिरों में पार्श्वभाग की ऊँचाई भी शिखर तक पहुँचती है। इस शैली के नियोजन में बाहरी रूप-रेखा प्रभावशाली तथा बड़े स्पष्ट तौर पर उभरती है, जिससे इसे रेखा-शिखर भी कहते है। आयताकार मन्दिर के हर तरफ रथिका तथा बाहर निकलते हुए कोणों का नियोजन होता है। शिखर पर आमलक या कलश की स्थापना इसे विशेष आकर्षण प्रदान करती है।

पुनः नागर शैली के अन्तर्गत स्थापत्य का आयोजन देखें। यदि आप मन्दिर की ओर मुँह किये हुए हैं, तो पहले मंडप, फिर अंतराल और तब गर्भगृह का नियोजन होता है। कहीं-कहीं मंडप के ऊपर पिरामिडनुमा शीर्ष भाग होता है। इसके अतिरिक्त मुख्य शिखर पर अंग-शिखर का प्रयोग तथा अन्तराल एवं मंडप में स्तम्भों का नियोजन भी इसकी विशिष्टता रही है। मंदिरों के छत उत्कीर्णित कलाकृतियों से युक्त एवं मेहराबदार अलंकृत स्तम्भों तथा प्रस्तर-पादों पर आधारित होते हैं। विकसित कोटि के मन्दिरों में गर्भगृह के पृष्ठ भाग तथा दोनों पार्श्वों में छज्जेदार गवाक्ष (झरोखे) मात्र आवश्यकतानुसार आन्तरिक तथा बाह्य भाग में अनूठा सन्तुलन स्थापित करते हैं। प्रायः प्रत्येक मंडप के अंग शिखरों से युक्त शिखर उत्तरोत्तर पतले होते हुए भव्य ऊँचाई तक पहुँचते हैं। कुछ मन्दिरों में अधिष्ठान के कोनों पर छोटे-छोटे देवालय भी स्थापित हैं जो मन्दिरों को पंचायतन रूप प्रदान करते हैं। मन्दिर के अन्दर ही गर्भगृह के चारों 'ओर प्रदक्षिण-पथ होने से इन्हे 'सान्धार-प्रासाद' कहा जाता है।

मन्दिर निर्माण के क्रम में राज दरभंगा ने एक अपवाद को छोड़कर (राजनगर का शिव मन्दिर – म0 रामेश्वर सिंह – 1906-07) नागर शैली को ही अपनाया, न कि वेसर शैली (मिश्रित शैली) या द्रविड़ शैली को। दरभंगा राज के संस्थापक म0म0 महेश ठाकुर ने इस क्रम में सोलहवीं सदी के सातवें दशक में दरभंगा से 35 कि0मी0 उत्तर-पूर्व स्थित एक छोटे से गाँव राजग्राम (मूल नाम – भौर) में अपने कुलदेवी कंकाली के लिए एक मन्दिर का निर्माण करवाया जो इस वंश का सर्वाधिक प्राचीन ज्ञात मन्दिर है। कालक्रम में यह क्षतिग्रस्त होता रहा तथा इसका पुनर्निर्माण भी होता रहा। किन्तु इसके मौलिक स्वरूप को सदा बचाए रखा गया, ऐसा इस गाँव के बुजुर्गो का कहना है। वैसे, मिथिला संदर्भित ऐतिहासिक ग्रन्थों में इस मन्दिर के स्थापत्य सम्बंधी वर्णन का सर्वथा अभाव है। इस वंश की यह पहली राजधानी थी और अधिक सम्भव पहला स्थापत्य सृजन भी। यह मन्दिर एक आयताकार चबूतरे पर, जो जमीन से 2'6'' ऊपर तक उठी है, अवस्थित है। मध्य में गर्भ-गृह है, उत्तर में दक्षिण

काली तथा दक्षिण में गणेश के लिए एक-एक छोटा देवालय स्थापित है। गर्भ-गृह आयताकार है तथा ऊपर की स्तूपी गुम्बदनुमा है जो गोलाई लिए हुए भी चार बराबर भागों में बाह्य रूप से विभाजित प्रतीत होती है। स्तूपी के शिखर पर आमलक या कलश के स्थान पर हनुमान की एक छोटी-सी-मूर्ति स्थापित है। इसकी यही विचित्रता इसे अन्य मन्दिरों से अलग करती है, अन्यथा स्थापत्य के दृष्टिकोण से प्राचीनता के अतिरिक्त इसमें कोई विशेष आकर्षण नहीं है। निश्चित रूप से इनके समय में और भी स्थापत्य-सृजन हुए होंगें, किन्तु न तो उनके अवशेष हैं और न ही तत्कालीन ग्रन्थों में उनका कोई जिक्र।

इस क्षेत्र में इस वंश के चौथे शासक शुभंकर ठाकुर का योगदान भी काफी महत्वपूर्ण रहा था, क्योंकि उन्होंने अपनी राजधानी 'भौर' से 'भौरा' (मधुबनी के निकट) स्थानान्तरित किया। यहाँ उन्होंने एक विशाल किला और महल बनवाया। यह समय था सत्रवहीं सदी के प्रथम दो दशकों का। उन्होंने दरभंगा के निकट बागमती नदी के दक्षिण शुभंकरपुर नामक एक छोटे टाउनशिप की स्थापना भी की। अभी भी यह क्षेत्र शुभंकरपुर के नाम से जाना जाता है. किन्तु कालान्तर में उनकी तमाम स्थापत्य सर्जनाएँ भूमिस्थ हो गई।

इसी तरह इस वंश के सातवें शासक सुन्दर ठाकुर, जिनका शासन काल सत्रहवीं सदी के पाँचवें तथा छठे दशक में रहा है, ने दरभंगा के निकट एक लघु नगरी की स्थापना तथा भवन निर्माण कार्य भी करवाया था। यह क्षेत्र सुन्दरपुर मुहल्ला के नाम से जाना जाता है किन्तु इसके अन्तर्गत बने भवनों के अवशेष भी विलुप्त हो चुके हैं।

खण्डवलाकुल के दसवें शासक राजा राघव सिंह ने दरभंगा राज की तत्कालीन राजधानी भौर में एक किला का निर्माण करवाया। इसके अतिरिक्त इन्होंने कई शिव-मन्दिर भी बनवाये। इनमें से दो भौर में तथा एक मधुबनी से आठ कि॰मी॰ उत्तर-पश्चिम सौराठ में जीर्णावस्था में अवस्थित हैं। **द एन्टीक्वेरियन रिमेन्स इन बिहार** में डी॰ आर॰ पाटिल ने भी इसका जिक्र किया है। किले के कुछ अवशेष अभी भी अतीत में अपने भव्य अस्तित्व की क्षीण कहानी कहते प्रतीत होते हैं। मन्दिरों की अवस्था दयनीय है और नागर शैली के अनुरूप ही इनका निर्माण हुआ है।

खण्डवला वंश-क्रम के तेरहवें शासक प्रताप सिंह के शासनकाल (1760-1775) में भौरा से राजधानी का आंशिक स्थानान्तरण दरभंगा हुआ तथा रामबाग की नींव पड़ी। इसी समय रामबाग पैलेस का मूल ढाँचा तैयार हुआ, यद्यपि इनके उत्तराधिकारी माधव सिंह तथा बाद के शासकों ने इसमें यथोचित परिवर्तन भी किया। यह एक अति उच्च अधिष्ठान पर स्थापित था, क्योंकि राजागण राजप्रासाद के बरामदे पर से ही हाथी की पीठ पर चढ़ा जाता है। वैसे अभी इस अधिष्ठान की ऊँचाई

बाहर से घटकर मात्र चार फीट के करीब रह गई है जबकि आँगन की ओर से लगभग सात फीट। इसके विशाल कक्ष और चतुस्साल (आँगन के चारों ओर कमरे) रूप इसकी भव्यता को प्रदर्शित करते हैं। उत्तरी भारत की स्थापत्य शैली से यह पूर्णतः प्रभावित है। वैसे सम्पूर्ण मिथिला में भवन-निर्माण की प्रचलित शैली का ही यह एक विकसित उदाहरण है, क्योंकि मैने मिथिला के गाँवों में देखा है कि यहाँ फूस घर (खर-पुआल तथा लकड़ी एवं मिट्टी से बने घर) भी चतुस्साल होते हैं। फर्श से छत की ऊँचाई लगभग बीस फीट है। मध्यकालीन राजे-रजवाड़ो के मुख्य भवन की तहर ही इसके स्थापत्य का विकास हुआ है।

इनके उत्तराधिकारी राजा माधव सिंह ने दरभंगा को पूर्णतः अपनी राजधानी बनायी। रामबाग पैलेस के निर्माण कार्य को भी उन्होंने पूर्ण किया। इसके चारों आरे लगभग नौ फीट ऊंची दीवाल खड़ी की गई। लगभग तीन फुट की दूरी पर इसमें अर्द्धचन्द्राकार घुमाव था तथा घुमाव के हर जोड़ बिन्दु पर एक आमलक की रचना थी। दुर्भाग्यवश यह भी 1934 ई० के भूकम्प में भूमिसात हो गया। इसके अतिरिक्त इन्होंने माधवेश्वर प्रांगण, दरभंगा में एक शिवालय बनवाया। उन्नीसवीं सदी के प्रथम दशक में इस मन्दिर का निर्माण हुआ। सतह से लगभग एक फीट नीचे इसका गर्भ-गृह अवस्थित है। अनुप्रस्थिका लगभग बारह फीट तक ऊपर है तथा इसका उत्थापन स्तूपी की तरह है। शिखर पर नागर शैली का अनुसरण करते हुए कलश की स्थापना है। यह मन्दिर अभी भी पूर्णतः दृढ़ है। यद्यपि इसके पुनर्निर्माण कई बार हुए हैं, लेकिन इसका मौलिक स्वरूप अपरिवर्तित रहा है। इसके दोनों पार्श्वो में दो देवालय स्थापित हैं। बहुत हद तक यह म० म० महेश ठाकुर द्वारा निर्मित भौर स्थित कंकाली मंदिर की तरह ही है। इसमें नागर शैली के अनुरूप मंडप का अभाव है। प्रवेश द्वार सामान्य है। पुनः खुला आँगन है। प्रदक्षिणा पथ छत से ढँका है। सौराठ में भी इसी तरह के एक शिव मन्दिर का निर्माण कार्य उन्होंने प्रारम्भ करवाया था, जो अपूर्ण रहा।

1807 से 1839 ई तक इनके उत्तराधिकारी महाराजा छत्र सिंह ने शासन किया। इन्होंने राजा माधव सिंह के सौराठ स्थित अपूर्ण माधवेश्वर मन्दिर को पूर्ण किया। इस मन्दिर के चारों ओर विशाल धर्मशाला बनवाया। इन्होंने अहिल्या स्थान में भी एक मन्दिर बनवाया। दरभंगा में अपने रहने के लिए छत्र विलास भवन बनवाया जो इस वंश का पहला दो मंजिला भवन था। किन्तु, ये भूमिसात हो गये। इनके बनवाये दो मन्दिर अभी भी रामबाग (दरभंगा) प्रांगण में अवस्थित हैं - सदर हरि मन्दिर तथा देवी मन्दिर। इन दोनों मन्दिरों का जीर्णोद्धार महाराजाधिराज रमेश्वर सिंह तथा महाराजाधिराज कामेश्वर सिंह ने करवाया। सदर हरि मन्दिर एक उच्च आयताकार अधिष्ठान पर अवस्थित है। इसका गर्भ-गृह वर्गाकार है और छत सपाट, जो स्तम्भों पर टिका हुआ है। गर्भ-गृह के दोनों पार्श्व में सटे हुए दो

देवालय हैं। गर्भगृह, प्रदक्षिणा-पथ तथा अंतराल एकाकार एवं एक सामान्य छत से आच्छादित हैं जबकि मंडप खुला है। छत के ऊपर चारो छोर पर परकोटा शोभायमान है। यह मंदिर प्राचीन हिन्दू स्थापत्य शैली का एक उदाहरण है। साँची प्रभृत स्थानों में गुप्तकाल में भी ऐसे मन्दिर बनवाये जाते थे। इनके द्वारा बनवाया देवी मन्दिर सतह से पाँच फीट ऊपर ऊँचे अधिष्ठान पर अवस्थित है। गर्भगृह वर्गाकार है तथा इसके ऊपर की स्तूपी बहुत की कलात्मक है। स्तूपी को बाह्यान्तर से पाँच मोटी पट्टियों द्वारा कलात्मक रूप से विभाजित किया गया है। शिखर को सुरुचिपूर्ण आमलक तथा कलश से सजाया गया है।

इसके बाद महाराजा रूद्र सिंह तथा महाराजा महेश्वर सिंह ने शासन किया। स्थापत्य की दृष्टि से इनका समय कोई खास महत्वपूर्ण नहीं माना जा सकता, सिवाय इसके कि महाराजा महेश्वर सिंह ने अँग्रेजों के विरुद्ध किलाबंदी करने के लिए नरगौना क्षेत्र में एक लघु किले के साथ-साथ बाहर से पचास फीट चौड़ी एवं 16 फीट गहरी खाई का निर्माण कार्य प्रारम्भ करवाया। किला तो ढह गया किन्तु खाई अभी भी आप देख सकते हैं जो इस क्षेत्र की रमणीयता बढ़ाता है।

1860 ई॰ से 1879 ई॰ तक दरभंगा राज 'कोर्ट ऑफ वार्ड्स' के तहत रहा। इस समय प्रशासनिक सुव्यवस्था पर ही अधिक ध्यान दिया गया है।

1879 से 1898 ई0 तक महाराजा लक्ष्मीश्वर सिंह ने शासन किया। इसे मिथिला का सृजनकारी युग माना जा सकता है। शास्त्रीय और आधुनिक शिक्षा से परिपूर्ण महाराज ने अपने स्थापत्य कृतियों में भी इसका परिचय दिया। सर्वप्रथम उन्होंने एक दो-महला चतुस्साल महल बनवाया, जिसे 'आनन्द बाग पैलेस' तथा 'लक्ष्मीश्वर विलास पैलेस' भी कहते हैं। सम्प्रति इसमें कामेश्वर सिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय का मुख्यालय अवस्थित है। इसके फर्श एवं सिढ़ी निर्माण में इतालवी तथा मकराना संगमरमर का प्रयोग है। यह महल स्थापत्य के दृष्टिकोण से समन्वयात्मक शैली का है, क्योंकि मध्यकालीन प्रचलित हिन्दू स्थापत्य शैली के संग-संग यूरोपीय शैली इसमें समन्वित है। इसकी घड़ी-मीनार, यूरोपीय बुर्ज, अत्यधिक हवादार एवं खुला-खुला सा माहौल, पोर्टिको, बाल्कनी आदि विशेषताएँ यूरोपीय स्थापत्य के परिचायक हैं। इस महल का सबसे बड़ा आकर्षण केन्द्र इसका दरबार हॉल है। इसकी संरचना में बहुत हद तक फ्राँस के वर्साय महल के मुख्य कक्ष की अनुकृति करने की कोशिश की गई है। छत सपाट और भीतरी भाग ज्यामितीय चित्रण से सुसज्जित है। संगमरमर के सफेद परियों को इस तरह सजाया गया है मानो उन्हीं के हाथों में छत टिका हो। महल के चारों ओर पचास एकड़ के क्षेत्र में वनस्पतिक तथा जैविक उद्यान लगाये गये। दरभंगा स्थित रागबाग प्रांगण के भीतर दिलकुश बाग के पूर्वी कोने पर इन्होंने एक सुन्दर दुर्गा मन्दिर भी बनवाया। यह एक छोटा किन्तु नागर

शैली के आधार पर बना सुन्दर मन्दिर है। सीढ़ी से ऊपर चढ़ने पर खुला आयताकार बरामदा है। पुनः छत से युक्त अन्तराल और फिर प्रदक्षिणा पथ के लिए गर्भ-गृह के चारों ओर काफी जगह है। इसका गर्भ-गृह आयताकार है। अधिष्ठान पर स्थापित इस दुर्गा मन्दिर के चारो कोनों पर चार और देवालय हैं। इन देवालायों के ऊपर की स्तूपी भी मुख्य स्तूपी के समान ही कलात्मक है, यद्यपि इनकी ऊँचाई उससे आधी है। इन चारों स्तूपियों पर भी आमलक की सज्जा है। इस मन्दिर के दीवारों पर वानस्पतिक नक्काशी उकेरी गयी है तथा कहीं-कहीं मछलियों के जोड़े भी दर्शाये गये हैं। इसके फर्श को काले तथा सफेद पत्थरों से इस तरह सजाया गया है, मानो यह महाकाव्य शैली का कोई खुले शतरंज की बिसात हो। इस मन्दिर में अन्तराल के ऊपर की झीरियों पर कुल तीन अक्षरों - एम॰, एल॰ तथा एस॰ को एक-दूसरे पर आरोपित कर उकेरा गया है, जो महाराजा लक्ष्मीश्वर सिंह के नाम का लघु रूप है। तीनों अक्षरों के लिए तीन अलग-अलग रंगों के प्रयोग किये गये हैं। इसके ठीक सामने एक छोटा-सा तलैया है जो इसकी रमणीयंता में वृद्धि करता है। सुर्खी, चूने और ईंट की मदद से बने इस मन्दिर को पूर्णतः भारतीय कारीगरों ने बनाया था।

महाराजाधिराज रमेश्वर सिंह का शासन काल (1898-1929) स्थापत्य के दृष्टिकोण से दरभंगा राज का स्वर्ण युग था। इस काल में वास्तुकला के अधिकांश कार्य राजनगर में हुए। स्थापत्य के दृष्टिकोण से वे राजनगर को एक स्वप्निल नगर बनाना चाहते थे। अकबर के फतेहपुर सिकरी से तो इसकी तुलना नहीं की जा सकती है, क्योंकि जितना अन्तर साम्राज्य तथा सरकार-ए-तिरहुत में था, उतना ही अंतर इन दोनों (फतेहपुर सिकरी तथा राजनगर) में है, फिर भी तत्कालीन राजनगर को मिथिलांचल का फतेहपुर सिकरी कहना अतिश्योक्ति भी नहीं होगी। राजनगर का किला, राजमहल तथा उसके निकट बने कार्यालय, पुस्तकालय एवं विविध मन्दिर इन्होंने ही बनवाये थे। राजनगर को वे दरभंगा राज की राजधनी बनाना चाहते थे। कमला नदी के तट पर बने इस महल की सुन्दरता बढ़ाने के लिए इसके सम्पूर्ण दीवार पर बेलबूटे का उकेरण है। पाँच तल्ले का इसका मुख्य मीनार लगभग 55 फीट ऊँचा है। इसके ऊपर में एक स्तूपी सुसज्जित है तथा शिखर पर आमलक या कलश के स्थान पर छतरी का नियोजन है। यह महल तीन-मंजिला था। इसका मध्य एवं मुख्य शीर्ष भाग स्तूपीनुमा है और स्तूपी के ऊपर दो कलशों का नियोजन है। इस महल में हिन्दू, इस्लामी तथा यूरोपीय स्थापत्य शैली का समन्वय स्पष्ट परिलक्षित है। सुर्खी-चूने की जोड़ाई, ईंट, संगमरमर तथा अन्य पत्थरों का प्रयोग, देशी-विदेशी अभियांत्रिकों का निर्देशन, स्थानीय एवं बाहरी कारीगरों की कुशलता तथा महाराजाधिराज रामेश्वर सिंह की कल्पना - इस सबों ने इस महल को वह रूप दिया कि आज इसका खंडहर भी पर्यटकों और इतिहासकारों को अपनी ओर आकर्षित करने के लिए काफी है। यूँ तो इस महल के

एक-एक कक्ष ही अपने सौंदर्य के लिए सराहनीय है, तथापि इसका दुर्गा हॉल और दरबार हॉल अपनी सजावटी डिजाइनों को लेकर महल का सुन्दरतम भाग माना जा सकता है। दुर्गा कक्ष के किसी स्थान से जब आप ऊपर की ओर देखेंगे तो 'सीलिंग' के ऊपर चित्रित देवी दुर्गा का चित्र आपको ही देखता प्रतीत होगा। इसके दरबार हॉल की भव्यता लक्ष्मीश्वर विलास पैलेस के दरबार हॉल से भी बढ़कर थी, ऐसा सुनने और पढ़ने में आया है। परन्तु 1934 के भूकम्प ने इसे इस तरह ध्वंस्त किया कि इसका पुनर्निर्माण असम्भव हो गया।

रमेश्वर सिंह को इस बात का श्रेय है कि उन्होंने शिव मन्दिर के रूप में इस क्षेत्र का पहला दक्षिण भारतीय शैली पर आधारित मन्दिर बनवाया। यह मन्दिर विविध सजावटी डिजाइनों से युक्त मेहराबदार स्तम्भों पर आधारित था। इसके नियोजन में बाहरी रूपरेखा बड़े स्पष्ट तथा प्रभावशाली ढंग से उभरी। इस आयताकाल मन्दिर के हर तरह रथिका तथा अनेक अस्त्रों (बाहर निकलते हुए कोणों) का नियोजन था। इस मन्दिर की बनावट यहाँ के अन्य सभी मन्दिरों से पूर्णतः अलग है। यह एक ऊँचे अधिष्ठान पर अवस्थित था। अधिष्ठान के ऊपर से किनारे-किनारे घेर दिया गया। पुनः सजे हुए प्रवेश द्वार से प्रवेश करने पर खुला स्थान था और फिर एक हल्का अन्तराल। छत से आच्छादित प्रदक्षिणा पथ के मध्य गर्भ-गृह, अनुप्रस्थिका आयताकार तथा उत्थापन दक्षिण भारतीय मन्दिरों के शिखर की तरह, मुख्य शिखर पर सजावटी अंग-शिखरों का नियोजन और मुख्य शिखर के निचले भाग के चारों कोनों पर अपेक्षाकृत छोटे-छोटे चार स्तूपियों की सजावट इस मंदिर की स्थापत्य-विशिष्टताएँ हैं। गर्भ-गृह के दोनों पार्श्व में छोटे-बड़े दो-दो स्तूपियों की सज्जा मन्दिर को और भी भव्य बना देती थी। इन चारों स्तूपियों के शिखर को अर्द्धविकसित कमल से सजाया गया था। 1934 का भूकम्प इसे पूर्णतः लील गया। कुछ कैमरा-चित्र तथा **द बिहार अर्थक्वेक एण्ड द दरभंगा राज** (कु. गंगानन्द सिंह, दरभंगा राज, 1936) पुस्तक में वर्णित तथ्यों के आधार पर ही इसका वर्णन सम्भव हो सका। इसके अतिरिक्त महाराज ने यहाँ गणेश, दुर्गा, सूर्य, राजराजेश्वरी, अर्द्धनारीश्वर, त्रिपुरसुन्दरी, काली आदि मन्दिर बनवाये जो नागर शैली पर आधारित हैं। ये सभी सुन्दरता में एक-दूसरे से प्रतिस्पर्द्धा करते प्रतीत होते हैं। किन्तु श्वेत संगमरमर से निर्मित काली मन्दिर अद्भुत है। एक छः फुट ऊँचे अधिष्ठान पर अवस्थित इस मन्दिर का प्रवेश द्वार चार स्तम्भों को छतोच्छादित कर बनाया गया है। इस काल में मिथिलांचल में बनने वाले मन्दिर, भवन आदि के दरवाजे, खिड़की, झरोखों और प्रवेश-द्वार नीचे से ऊपर खड़ी रेखा की तरह बढ़ते थे और पुनः एक निश्चित ऊँचाई के बाद उलटे हुए अर्द्धचन्द्र का आकार ले लेते थे। भारत में इसका प्रचलन ईस्वी सन् के पहले से था। आश्चर्य है कि यह बहुत हद तक अभी भी प्रचलित है। प्रवेश-द्वार से ऊपर चढ़ने पर पहले खुला स्थान, और फिर मंडप का

आयोजन है जो वर्गाकार है। इसका उत्थान एक विशाल शिवलिंग की तरह हुआ है, जो शिखर पर आमलक से सुसज्जित है। छत से आच्छादित प्रदिक्षणा पथ के मध्य गर्भ-गृह आयताकार है तथा इसका उत्थापन एक खड़ी स्तूपी की तरह है; जिसके शिखर पर आमलक की सज्जा है। इस मन्दिर के चारो कोनों पर गर्भ-गृह की स्तूपी से काफी पतली किन्तु उसी शैली एवं आकार की खड़ी स्तूपी बनी हुई है। यह मन्दिर बहुत ही पवित्र और सादगीपूर्ण दीख पड़ता है। इसके सामने एक सुन्दर पोखर का आयोजन है। 1934 में यह मन्दिर ध्वस्त हो गया था किन्तु महाराजाधिराज कामेश्वर सिंह ने इसका पुनर्निर्माण करवा दिया। राजनगर में रमेश्वर सिंह ने एक विशाल पुस्तकालय एवं कार्यालय भवन तथा विविध प्रयोजनार्थ अनेक भवनों का निर्माण करवाया। इसके अतिरिक्त इन्होंने दरभंगा में रामबाग के भीतर कंकाली मन्दिर, इन्द्र भवन आदि का निर्माण करवाया। माधवेश्वर प्रांगण में इन्होंने लक्ष्मीश्वर तारा, रूद्रेश्वरी काली एवं दुर्गा पंचायतन का निर्माण करवाया। मधुबनी में भव्य श्यामा मन्दिर एवं इसके निकट भौरा गढ़ी में गुह्य काली मन्दिर, पटना में काली मन्दिर तथा दो भव्य भवन इन्होंने ही बनवाये। इन्होंने कलकत्ता, इलाहाबाद, लाहौर, कनखल, मुजफ्फरपुर, शिमला, बनारस, खड़गपुर आदि जगहों पर भी मन्दिर बनवाये। मौजूद नक्शों के आधार पर ये मन्दिर नागर शैली पर आधारित है तथा यथासंभव क्षेत्रीय विशेषताओं को अपने में संजोये हुए है।

इनके उत्तराधिकारी तथा दरभंगा राज के अंतिम माराजाधिराज कामेश्वर सिंह (1929-1952) का शासनकाल वास्तुकाल के क्षेत्र में आधुनिक तथा परम्परागत शैली के समन्वय का काल था। चूँकि भवन निर्माण के अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की आधुनिक तकनीकी और साधन आसानी से उपलब्ध थे, अत: सुदृढ़ सुव्यवस्थित और सुन्दर भवनों का निर्माण इस काल में हुआ। महाराजाधिराज कामेश्वर सिंह ने स्थापत्य सन्दर्भित मुख्यत: दो तरह के कार्य किये - पुननिर्माण तथा नवर्निर्माण। पुनर्निर्माण इसलिए महत्वपूर्ण है कि 1934 के विध्वंसकारी भूकम्प ने दरभंगा तथा इसके निकटवर्ती नगरों में दरभंगा राज के अधिकांश भवनों को या तो ध्वस्त कर दिया या फिर इतनी क्षति पहुँचायी कि उन्हें नये सिरे से बनवाना पड़ा। नवनिर्माण कार्य भी बड़े व्यापक पैमाने पर हुआ। विशेष रूप नरगौना पैलेस, बेला पैलेस, सुविख्यात श्यामा मंदिर, रागबाग किला, दो सुन्दर राज कार्यालय एवं विविध प्रयोजनार्थ अनेक भवन 1934 से 1942 के दौरान बने। सबसे बड़ी बात तो यह हुई कि इस समय दरभंगा को एक आधुनिक आदर्श नगर के रूप में विकसित करने की योजना बनी और उस पर कार्यान्वयन भी हुआ। भवन निर्माण के क्षेत्र में दरभंगा राज के लिए यह एक सर्वथा नया युग था - तकनीकी, साधान और शैली तीनों ही दृष्टिकोण से। अब स्टील, फ्रेम, सीमेन्ट, मोर्टार, बालू आदि ने सुर्खी-चूने का स्थान ले लिया। नरगौना और बेला पैलेस को छोड़कर एक तल्ले भवन बनने लगे। मेहराब, परकोटे और पारम्परिक अलंकरणों

के स्थान पर सुदृढ़ सुव्यवस्थित, सुविधानुकूल और अपेक्षाकृत सादगीपूर्ण भवन बनने लगे। प्रत्येक भवन के मुख्य संरचना की नींव एक ही इकाई के रूप में होने लगी। भवन भी यथासंभव एक ही इकाई के रूप में संरचित होते थे। 1934 के भूकम्प से भयभीत अभियन्ताओं ने भूकम्पसिद्ध भवन-संरचना हेतु दो तरह के उपाय किये – पहला, फोर्स्ड कन्क्रीट फ्रेम का प्रयोग तथा दूसरा, स्टील फ्रेम का प्रयोग। पुनः इनके ऊपर रीइन्फोर्स्ड कन्क्रीट छत ढाले जाते थे। इस संदर्भ में दरभंगा राज के मुख्य अभियन्ता बी० बी० दत्त के 01.10.1935 की एक टिप्पणी देखें:

> *"It was found that during the destructive earthquake the damage to two storied buildings was generally restricted to the upper floor, the fact can be ascribed to the increase in the vibrations in the highest part of the buildings. It is for this reason that the new structures in the Raj area of one storied with light roofs rigldly bullt in the walls, ...While embodying the above conditions in the designs and making allowances for the horizontal oscillating force therein, two types of constructions were adopted. The reinforeced concrete frame, and steel frame buildings, with reinforced concrete roofs. The frame takes up all the stresses of the building and the wall perform their true functioning as weather screen" (The Bihar Earthquake and the and Darbhanga Raj, Kumar Ganganand Sinha, 1936)*

पुराने नरगौना पैलेस के स्थान पर नया नरगौना पैलेस महाराज कामेश्वर सिंह के निर्देशन में मैकिन्टोश बर्न कम्पनी की सेवा लेकर बनायी गयी। इसकी फर्निशिंग कैलिम्पोंग आर्टस् एण्ड क्राफ्ट्स कंपनी के माध्यम से करवाया गया। कक्षों के रंग-रोगन की योजना जी0 पी0 डेन्बी ने की थी। तत्कालीन परिप्रेक्ष्य में इसके जर्रे-जर्रे से आधुनिकता की झलक मिलती है और फिर कलात्मकता की कसौटी पर बहुत ऊपर उभरने के बावजूद इसकी सादगी ही इसका आकर्षण है।

1936 में ही बेला पैलेस की नींव भी डाली गयी जो राजा बहादुर विश्वेश्वर सिंह के निवासार्थ कामेश्वर सिंह ने बनवाया। यह यूरोपीय शैली पर आधारित लन्दन के बकिंघम पैलेस के तर्ज पर 1940 तक बनकर तैयार हुआ। इसके निर्माण में स्टील फ्रेम का प्रयोग किया गया। नरगौना की तरह यह भी दो तल्ले का है, किन्तु इसके ऊपरी तल्ले का छत नरगौना की तरह सपाट न होकर कोणीय है। ऊपरी छत के ऊपर सीमेंट के टाइल्स (खपड़े) की डिजाइन बनी हुई है, जो इस काल के बने राज दरभंगा के भवनों

में अपवादस्वरूप ही है। इसकी सीढ़ी और फर्श पर संगमरमर का प्रयोग किया गया है। इसके चारों ओर के भूखण्ड को जैविक उद्यान के रूप में विकसित किया गया था। यदि उद्यान को अपवाद मान लिया जाय तो बेला पैलेस और इसका प्रांगण सर्वाधिक सुरक्षित और स्तरित है। मेसर्स मैकिन्टोश बर्न की अभियांत्रिकी सेवा इसके निर्माण हेतु ली गयी थी। इसी कम्पनी ने योजनाबद्ध तरीके से दरभंगा राज का मुख्य कार्यालय, तोपखाना (ट्रेजरी) तथा महफीसखाना (रेकार्ड रूम) को महाराजा के निर्देशानुसार बनाया था। मेसर्स ब्रिटेनिया बिल्डिंग्स ने राज पुस्तकालय के निर्माण में अपनी अभियांत्रिकी सेवा प्रदान की थी जिसके निर्देशकों में से एक सर आशुतोष मुखर्जी के पुत्र इंजीनियर बामा प्रसाद मुखर्जी थे। कोलेनल टेम्पल ने रमेश्वर प्लेस जिसे चौरंगी कहते हैं, का डिजाइन तैयार किया तथा मैकेन्टोश बर्न ने इसे आकार प्रदान किया। मेसर्स मार्टिन एण्ड कम्पनी ने महाराजा के आदेशानुसार लेडी विलिंगडन हॉस्पीटल, जो महाराजाधिराज कामेश्वर सिंह चैरिटेबल अस्पताल के नाम से कार्यरत है, बनवाया।

छोटे-बड़े सभी राजे-रजवाड़े में किला-निर्माण की एक परम्परा-सी रही है, तो फिर दरभंगा राज कैसे पीछे रहता। बीसवीं सदी के पाँचवें दशक के प्रारंभ के साथ ही एक भव्य और विशाल किला-निर्माण की योजना बनी। इसकी तकनीकी व्यवस्था और इसका निर्माण कार्य मेसर्स मैकिन्टोश बर्न ने किया। किले की उन्यास पचास फीट तक है। किले की दीवार की मोटाई सवा दो फीट है। इसका कलात्मक एवं भव्य द्वार मुगलों द्वारा बनवाये गये किलों के द्वार के अनुरूप है, पर दृढ़ता उनसे कहीं अधिक है। द्वार निर्माण में लाल पत्थर का प्रयोग किया गया है। पहरेदारों के निरीक्षणार्थ जगह-जगह पर किले के ऊपर अलंकृत निरीक्षण चौकी बनी हुई है। नागरिक सुविधा कानून के अंतर्गत इसका निर्माण कार्य पृष्ठभाग से अपूर्ण रहा, फिर भी इसकी भव्यता दर्शनीय है, भले ही इसकी कोई उपयोगिता सिद्ध नहीं हो रही है।

खण्डवलाकुल के इस अंतिम उत्तराधिकारी ने अपने पिता की स्मृति में 1932 में 'रमेश्वरी श्यामा मंदिर' का निर्माण करवाया। यह मन्दिर नागर शैली का एक सुन्दर उदाहरण है। चार फीट ऊँचे आयताकार अधिष्ठान पर अवस्थित इस मंदिर के गर्भ-गृह की अनुप्रस्थिका वर्गाकार है। उत्थापन उत्तरोत्तर पतला होता गया है तथा शिखर के शीर्ष पर कलश की स्थापना है। मुख्य शिखर पर अंग शिखरों का सुन्दर नियोजन है जो पर्वत श्रृंगों की परिकल्पना को साकार करते हैं। यह मंदिर माधवेश्वर प्रांगण, दरभंगा में स्थित है तथा नागर शैली के अनुरूप बने अधिकांश मन्दिर की तरह इसका प्रदक्षिणा पथ एवं अंतराल छत से आच्छादित है। इसके नियोजन में बाहरी रूपरेखा अपेक्षाकृत स्पष्ट और प्रभावशाली ढंग से उभरी है, विशेषकर बाहर निकलते हुए कोणों का नियोजन दर्शनीय है।

इसके अतिरिक्त सैकड़ों छोटे-बड़े भवनों के निर्माण दरभंगा तथा इसके निकट के क्षेत्रों में हुए

जो किसी-न-किसी तरह सार्वजनिक सेवार्थ अपनी उपयोगिता सिद्ध कर रहे हैं। चाहे शिक्षण संस्थान के रूप में हो या सार्वजनिक चिकित्सालय, सरकारी कार्यालय के रूप में हों या भवनों के नियोजन, ये सभी कुछ इस तरह किये गये कि दरभंगा एक आदर्श नगर के रूप में विकसित हुआ। इस काल के एक श्रेष्ठ शिक्षाविद् कुमार गंगानन्द सिंह की आँखों देखी बानगी देखें:

> *"All without a single exception have been built earthquake-proof, and the plan of their construction has been carefully laid out to give the Raj area the appearance and convenlence of a modern town." (The Bihar Earthquake and the Darbhanga Raj)*

दरभंगा राज के स्थापत्य प्रभावशाली अलंकरण और आनुपातिक सौम्यता के साथ-साथ अन्तर्भूत शक्ति, संतुलन एवं समन्वैयात्मकता जैसी विशिष्टताओं के कारण स्थापना के उत्कृष्ट उदाहरण है।

संदर्भ

क. मूल स्रोत

1. महत्वपूर्ण अभियांत्रिकी दस्तावे, राज दरभंगा अभियंत्रणा विभाग, रेकॉर्ड रूप, दरभंगा।
2. अभियांत्रिकी नक्शे, एम॰ के॰ एस॰ के॰ फाउन्डेशन, दरभंगा।
3. डीड ऑफ कामेश्वर रीलीजियस ट्रस्ट, कामेश्वर धार्मिक न्यास, दरभंगा।
4. अभियांत्रिकी फाइल, क्षेत्रीय अभिलेखागार, दरभंगा।
5. रजिस्टर ऑफ राज टेम्पल्स, एम॰ के॰ एस॰ के॰ फाउन्डेशन, दरभंगा।
6. रजिस्टर ऑफ राज बिल्डिंग्स अन्डर इन्जिनियरिंग डिपार्टमेन्ट, राज दरभंगा, हेड ऑफिस, राज दरभंगा।
7. एलबम : मन्दिर और भवन, राज दरभंगा।

ख. द्वितीय स्रोत

1. **द बिहार अर्थक्वेक एण्ड द दरभंगा राज**, कुमार गंगानन्द सिंह, 1936.
2. **हिस्ट्री ऑफ तिरहुत**, एस॰ एन॰ सिंह, 1922,
3. **हिस्ट्री ऑफ मिथिला**, उपेन्द्र ठाकुर, 1956.
4. **मिथिला राज प्राप्ति कवितावली**, सोन कवि।
5. **मिथिला**, विद्यानन्द ठाकुर, पूर्णियाँ, 1936.
6. **मिथिला दर्शन**, शशिनाथ चौधारी, दरभंगा, 1931.
7. **मिथिला व मैथिली राजवंश का इतिहास**, गंगाबाई, दरभंगा, 1938.
8. **कामेश्वर कीर्तिविलास काव्यम्**, वागदत्त शर्मा, दरभंगा, 1945.

9. **मेम्मायर्स ऑफ द ज्योलॉजिकल सर्वे ऑफ इण्डिया**, वोल्यूम 73, कलकत्ता, 1939.
10. **मिथिला इन इण्डिया**, अतुलचन्द्र, माल्दा, 1955.
11. **श्रीमत् खण्डवलाकुल दीपिका**, म० म० कृष्ण सिंह ठाकुर, दरभंगा, 1916.
12. **कन्दर्पीघाट की लड़ाई**, लाल कवि, दरभंगा, 1927.
13. **रियाज-ए-तिरहुत**, अयोध्या प्रसाद 'बहार', 1867, सं0 हेतुकर झा, दरभंगा, 1997.
14. **फाइव थाउजेंड इयर्स ऑफ इण्डियन आर्किटेक्चर**, पब्लिकेशन डीवीजन, नयी दिल्ली, 1951.
15. **मध्यकालीन भारतीय संस्कृति**, आशीर्वादीलाल श्रीवास्तव, आगरा, 1986.
16. **कल्चरल हेरिटेज ऑफ मिथिला**, बी० के० मिश्रा, इलाहाबाद, 1979.
17. **द एन्टीक्वेरियन रिमेन्स इन बिहार**, डी० आर० पाटिल, पटना, 1963.
18. **वेरियस सिस्टम्स ऑफ हिन्दू एण्ड मोहम्मडन आर्किटेक्चर**, ए० स० आई० प्प. 1873.
19. **इण्डियन हिस्टोरिकल क्वार्टरली.**
20. **जर्नल ऑफ द एशियाटिक सोसाइटी ऑफ बंगाल**, कलकत्ता।
21. **इण्डियन एन्टीक्वेरी**, बुम्बई.
22. **जर्नल ऑफ द बिहार रिसर्च सोसाइटी**, पटना।
23. **मिथिला दर्पण।**
24. **मिथिला मिहिर।**
25. **आर्यावर्त।**
26. **द इण्डियन नेशन।**
27. **बंगाल डिस्ट्रिक्ट गजेटियर्स**, एल० एस० एस० ओ० मैले, 1907.
28. **हिस्ट्री ऑफ इण्डियन एण्ड इर्स्टन आर्किटेक्चर - 1**, जेम्स फरग्यूसन, लंदन, 1910.
29. **ए स्टेटिस्टिकल एकाउन्ट ऑफ बंगाल**, डब्ल्यू० डब्ल्यू० हंटर, लंदन, 1877.
30. **बुलेटिन ऑफ द मिथिला रिसर्च इन्स्टीच्यूट**, दरभंगा - 1965-1971.
31. **द इकॉनोमिक हेरिटेज ऑफ मिथिला**, एस० के० झा एवं बी० झा, पटना, 1996.

Art and Archaeology of Mithila



Directorate of Archaeology

Dept. of Art, Culture and Youth, Bihar, Patna

Art and Archaeology of Mithila

Chief Editor
S.K. Sinha
Director, Archaeology, Bihar

Editors
Dr. Atul Kumar Verma
Dr. Kumar Anand
Dr. S.K. Jha

Directorate of Archaeology
Dept. of Art, Culture & Youth, Bihar
2006

Contents

Archaeology Section

1. An Agenda For Mithila Excavations and Research 13-18
Shankar Kumar Jha

2. Early Settlements of Mithila In Light of Recent Discoveries (A Brief Survey of Darbhanga and Madhubani Districts) 19-36
Satyendra Kumar Jha

3. पुरातत्त्व की दृष्टि में मिथिला 37-41
चितरंजन प्रसाद सिन्हा

4. मिथिला के उपेक्षित पुरास्थल 42-44
धर्मवीर

5. सीतामढ़ी एवं जनकपुर के पुरावशेष 45-51
जयदेव मिश्र

6. कोशी क्षेत्र का पुरातात्विक अध्ययन : समस्याएँ एवं सम्भावनाएँ 52-57
अविनाश कुमार झा

7. मिथिलांचल का एक विस्मृत् नगर-बलिराजगढ़ 58-63
अलखदेव प्रसाद श्रीवास्तव

8. Early Inscriptions of Darbhanga Division 64-68
Ashutosh Kumar

9. कृषक संरचना प्रारंभिक मिथिला के संदर्भ में 69-74
कृष्ण कुमार मंडल

Art Section

10. कर्णाटकालीन मूत्तिकला 77-82
प्रफुल्ल कुमार सिंह मौन

11. मधुबनी जिला से प्राप्त पाल सेन कालीन प्रस्तर मूर्तियाँ 83-91
भोगेन्द्र झा

12. वीरपुर (जिला बेगुसराय) से प्राप्त कतिपय पालकालीन मूर्तियाँ 92-97
ठाकुर हरेन्द्र दयाल

13. Sun Worship in The Art of Mithila 98-102

B. Jha

Anil Kumar Choudhary

14. A Unique Representation of Ganga-Yamuna in The Art of Mithila 103-106

U.C. Dwivedi

15. मुक्तेश्वर स्थान : मिथक, कला एवं पुरावशेष 107-112

शिवकुमार मिश्र

16. दरभंगा राज के स्थापत्य संदर्भित धरोहर 113-125

अशोक कुमार

17. Reading Mithila Paintings : Problems and Perspectives in the Study of Popular Culture of Mithila 126-133

Sadan Jha

18. मिथिला चित्रकला - एक विश्लेषण 134-142

अंजनी कुमार

19. Godana : The Art of Organic Writing in Mithila 143-146

Lal Babu Singh

Our Contributors 147-149